RNI No - RAJHIN/2003/9899 Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 June 2018 Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd June 2018

मासिक पत्रिका

अजायब ✵ बानी

वर्ष : सोलहवां | अंक : दूसरा | जून–2018

5
सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
प्रभु जी मेरे औगुन चित न धरो
(महात्मा सूरदास जी की बानी)

25
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
शब्दों के जरिए आभार प्रकट करना

34
अहमदाबाद में सतसंग के कार्यक्रम की जानकारी
धन्य अजायब

संपादक–प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71 80 79 08 46 01 & 98 71 50 19 99
विशेष सलाहकार–गुरमेल सिंह नौरिया
96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक–नन्दनी, **सहयोग**–परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने पॉलीकम ऑफसैट, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। मूल्य : ₹5/–
e-mail : dhanajaibs@gmail.com 195 Website : www.ajaibbani.org

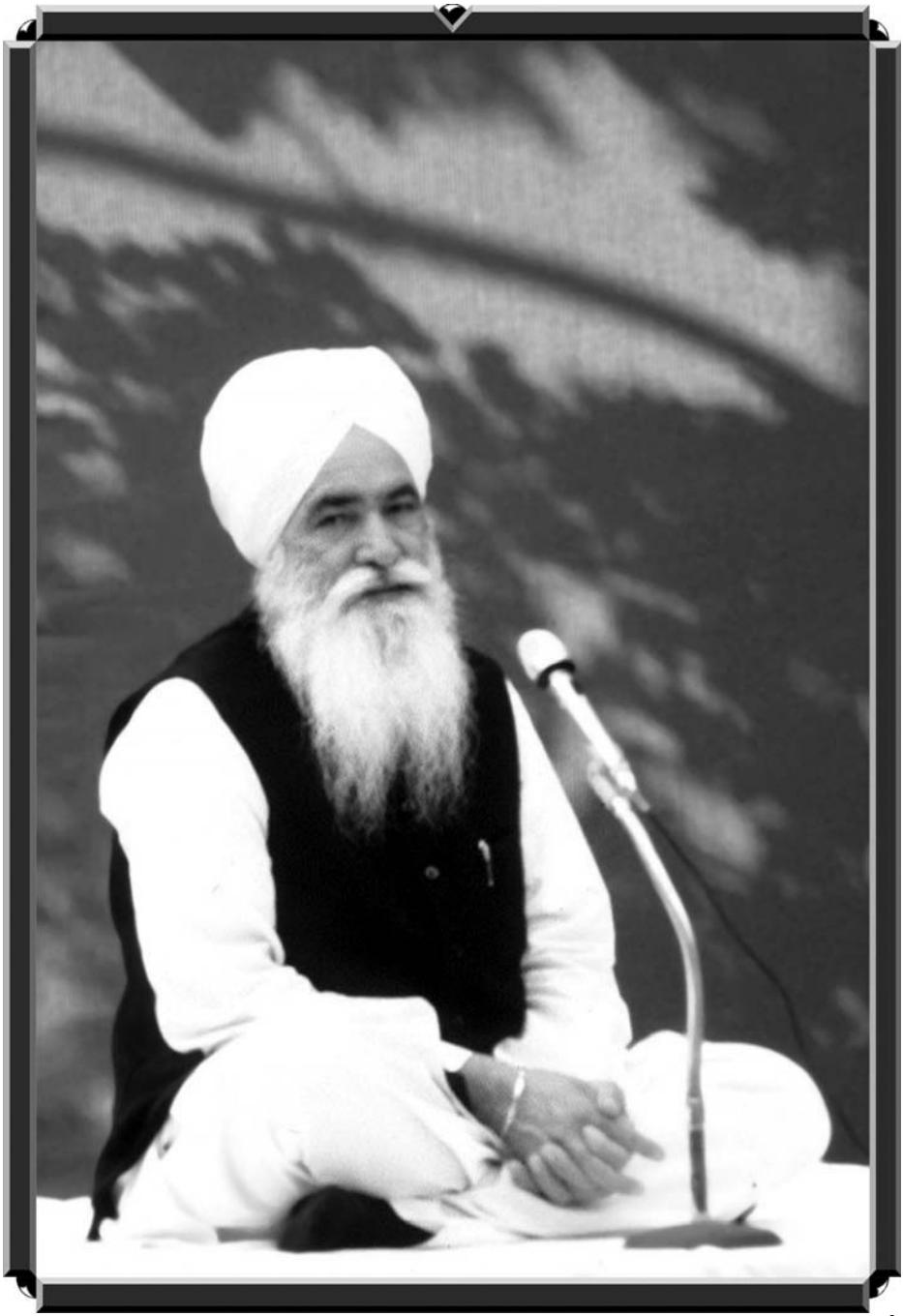

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

प्रभु जी मेरे औगुन चित न धरो

(महात्मा सूरदास जी की बानी) दिल्ली

प्रभु जी मेरे औगुन चित न धरो।।

यह बानी महात्मा सूरदास जी की है, आपकी हिस्ट्री में आता है कि आप अकबर बादशाह के दरबार में काफी अच्छे रूतबे के मालिक थे। उन दिनों हिन्दुस्तान में नहरों का कोई खास प्रबंध नहीं था, दुनिया बहुत भुखमरी का शिकार थी। उस समय के अफसर लोगों से जबरदस्ती टैक्स वसूल किया करते थे। लोगों के लिए टैक्स देना बहुत मुश्किल था। आपकी ड्यूटी टैक्स वसूल करने के लिए लगाई गई। पहले आपका नाम मदन मोहन था लेकिन इस दौरान आपके दिल में प्रभु भक्ति का शौक उठा, आप नौकरी छोड़कर प्रभु भक्ति में लग गए।

एक दिन आप प्रभु की याद में तालाब के किनारे चले गए। वहाँ कुछ औरतें कपड़े धो रही थी। एक औरत के ऊपर आपकी ऐसी निगाह गई कि आपका मन उसकी तरफ खिंचा चला गया। बाद में आपने सोचा कि इन आँखों ने कैसा धोखा दिया है? आपने सलाईयां लेकर अपनी दोनों आँखे निकाल ली। उस दिन से आपका नाम सूरदास पड़ गया। आमतौर पर जिसकी बाहरी आँखें न हों उसे सूरदास कहा जाता है। गुरु नानक साहब कहते हैंः

अंधे से न आखिए, जिन मुख लोयड़न नाहे।
अंधे से ही नानका, जो खसमों खुत्ते जाहे।।

आप कहते हैं उन्हें अंधा न कहें जिनकी आँखें नहीं, असली अंधे वे हैं जो आँखें होने के बावजूद मालिक को छोड़कर दूसरी

तरफ फिरते हैं। वह मालिक हमारे अंदर है लेकिन हम अंदर जाकर उसकी तलाश नहीं करते। हम दिन-रात मालिक की तलाश बाहर जंगल-पहाड़ों, मंदिर-मस्जिदों में करते हैं। परमात्मा ने हमें मुफ्त में यह मंदिर दिया है इस मंदिर को खुद परमात्मा ने बनाया है लेकिन हमने इसके अंदर कभी खोजने की कोशिश ही नहीं की।

अगर हमारी कोई वस्तु इस जगह गुम है हम बाहर जाकर उस वस्तु की तलाश करेंगे चाहे वहाँ जितनी मर्जी रोशनी हो, चाहे हम अपनी सहायता के लिए अपने साथ जितने मर्जी लोग लगा लें हम कभी भी अपनी खोज में कामयाब नहीं हो सकते। हमें चाहिए कि हम बाहरी खोज छोड़कर इस वस्तु को घर के अंदर ही खोजें, आज नहीं तो कल हम इस वस्तु को खोजने में कामयाब हो जाएंगे।

इसी तरह परमात्मा हमारे शरीर के अंदर है। हम जब तक अपने शरीर के अंदर जाकर परमात्मा की खोज नहीं करते तब तक परमात्मा से नहीं मिल सकते। गुरु तेगबहादुर जी कहते हैं:

काहे रे वन खोजन जाई, काहे रे वन खोजन जाई,
सर्व निवासी सदा अलेपा, तो ही संग समाई,
पोहप मद्य ज्यों वास वसत है, मुक्कर माहे जैसे छाई,
तैसे ही हर वसे निरंतर, घट ही खोजो भाई,
बाहर भीतर ऐको जाना, ऐह गुरु ज्ञान बताई,
जन नानक बिन आपा चीने, मिटे ना भरम की काई।

आप जिसके लिए घर-बार छोड़कर जंगल-पहाड़ों में फिरते हैं, आपको जिस मालिक की तलाश है वह तो चौबिस घंटे आपके अंदर आपकी इंतजार में बैठा है। जिस तरह फूल के अंदर खुशबू है बस! फूल को नाक के साथ लगाने की जरूरत है खुशबू अपने आप ही आ जाती है। शीशे के अंदर रोशनी समाई हुई है, दूध के अंदर घी समाया हुआ है और मेहंदी के पत्तो के अंदर रंग समाया

हुआ है उसी तरह मालिक आपके जिस्म के अंदर समाया हुआ है। अपने अंदर परमात्मा को समझना या देखना, औरो के अंदर परमात्मा को समझने या देखने का मसला हम अपने आप हल नहीं कर सकते। हमें यह भेद उन लोगों से लेना पड़ता है उनके तजुर्बे से फायदा उठाना पड़ता है जिन्होंने इस मसले को हल कर लिया है। उन्होंने अपने अंदर परमात्मा को प्रकट कर लिया है, उनके पास जाकर ही हमारा मसला हल हो सकता है। वे हमारी मदद करते हैं और हमें बताते हैं कि आपने किस तरह शब्द-अभ्यास करना है, किस तरह शरीर के अंदर जाना है?

सतसंगी की ड्यूटी है कि वह नियमित रूप से अपना भजन-अभ्यास करे। जब हमारी आत्मा उस मालिक से मिल जाती है तब हम लोगों के अवगुण देखने छोड़ देते हैं और अपने अवगुण देखते हैं। सन्तमत का यही कायदा है कि तू लोगों के अवगुण क्यों देखता है, क्यों मक्खी की तरह भिन-भिनाता है? तू अपने अवगुण देख।

क्यों देखे पराए अवगुण।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर आप किसी की निन्दा करते हैं तो आपके गुण और आपका भजन उसके खाते में जमा हो जाएगा और उसके पाप-ऐब आपके खाते में जमा हो जाएंगे।'' आमतौर पर आप महात्मा शेख शादी की मिसाल दिया करते थे कि शेख शादी कहा करते थे, ''अगर मैंने निंदा करनी है तो मैं अपनी माता की निंदा करूंगा ताकि शुभ गुण हमारे घर में ही रह जाएं।''

सन्त-महात्मा प्रभु से मिलकर भी यह नहीं कहते कि हम ऊँचे हैं, सुच्चे हैं बहुत अच्छे हैं बल्कि वे यह कहते हैं कि हमारे अंदर तो

कोई गुण नहीं था, कोई काबलियत नहीं थी यह तो उस प्रभु की दया-मेहर हुई कि उसने हमें अपने घर में जगह दी, आकर अपना भेद दिया। सूरदास जी कहते हैं कि हे प्रभु! मैं आपके दरबार में आने के काबिल नहीं था मैं तो सिर्फ आपके आगे विनती करता हूँ कि आप अब मेरे अवगुण न देखें। महात्मा हमें समझाते हैंः

फोल न कागज बदियां वाले, दर तो धक्क न मैंनू।

तू मेरा गुनाह वाला कागज न देख, मैं तेरे दरवाजे पर आया हूँ, तू मुझे धक्के मत दे। महात्मा संसार में बहुत नम्रता और आजजी लेकर आते हैं।

महाराज सावन सिंह जी आमतौर पर वेद व्यास के लड़के सुखदेव मुनि की कहानी सुनाया करते थे कि सुखदेव मुनि को माता के पेट के अंदर ही कई जन्मों का ज्ञान था। जब सुखदेव मुनि का जन्म हुआ उस समय उस पर माया का कोई असर नहीं था लेकिन उसके दिल में यह अहंकार था कि मैं वेद व्यास का लड़का हूँ मुझे किसी महात्मा के पास जाने की क्या जरूरत है?

जब सुखदेव मुनि अपने तप के बल से विष्णुपुरी गया तो उसे वहाँ धक्के पड़े कि निगुरे का इस जगह कोई दखल नहीं। सुखदेव मुनि के दिल में ख्याल आया कि जब मुझे यहाँ धक्के पड़ रहे हैं तो मैं ऊपर किस तरह जा सकता हूँ? सुखदेव मुनि ने अपने पिता से पूछा, ''पिता जी! मुझे अंदर से यह जवाब मिलता है, वहाँ मुझे कोई खड़ा नहीं होने देता कि निगुरे की यहाँ कोई जगह नहीं।'' वेद व्यास ने कहा, ''हाँ भई! गुरु धारण करना हर एक के लिए जरूरी होता है।'' सुखदेव मुनि ने वेद व्यास से पूछा कि मैं संसार में किसे गुरु धारण करूं? वेद व्यास ने कहा कि इस समय राजा जनक तुझे ज्ञान करवा सकते हैं तू उनके पास चला जा।

सुखदेव मुनि सोच में पड़ गया कि जनक राजा है और मैं योगी हूँ। वह गृहस्थी है और मैं त्यागी हूँ। मैं त्यागी होकर गृहस्थी को कैसे गुरु धारण करूं? वह जब भी राजा जनक के पास जाता कोई न कोई अभाव लेकर, निन्दा करके वापिस आ जाता।

महाराज जी कहा करते थे कि आप जिसकी निन्दा करते हैं आप उसका फायदा और अपना नुकसान करते हैं। निन्दा करते-करते सुखदेव मुनि की सारी कला खत्म हो गई सिर्फ दो ही कला रहती थी। उस समय नारद ने देखा कि सुखदेव तो लुटा जा रहा है इसे पता नहीं कि इसका कितना नुकसान हो रहा है? एक बार जब फिर सुखदेव मुनि राजा जनक की तरफ जाने लगा तो नारद ने एक बूढ़े का रूप धारण करके नदी में मिट्टी की टोकरियां भर-भरकर फैंकनी शरू कर दी। हमें अपने नुकसान का तो ज्ञान नहीं होता लेकिन हम लोगों को समझाना शुरू कर देते हैं।

सुखदेव मुनि ने उस बूढ़े से कहा, ''देख बाबा! इतनी बड़ी नदी में बाँध नहीं लग सकता अगर तूने ऐसा करना ही है तो पहले यहाँ छोटी-छोटी लकड़ियां गाढ़ फिर मिट्टी के छोटे-छोटे ढ़ेले फैंक तब शायद बाँध लग जाए नहीं तो तेरी मेहनत बेकार चली जाएगी।''

नारद ने कहा, ''तू मुझे क्या समझाता है मुझसे ज्यादा बेवकूफ तो वेद व्यास का लड़का सुखदेव मुनि है उसकी बारह कला तो नष्ट हो चुकी हैं बाकी दो कला ही रह गई हैं।'' जब सुखदेव मुनि को पता लगा कि यह बूढ़ा तो मुझे ही चेतावनी दे रहा है कि मेरा इतना नुकसान हो चुका है, वह बेहोश होकर वहीं गिर गया। जब उसे होश आई तब वहाँ न कोई नदी-नाला था और न ही कोई बूढ़ा था।

आखिर सुखदेव मुनि राजा जनक की तरफ चल पड़ा लेकिन उसके दिल में फिर भी वही ख्याल था कि मैं त्यागी हूँ वह गृहस्थी

है। आखिर वह राजा जनक के दरवाजे पर जाकर खड़ा हो गया। राजा जनक ने उसे बुलावा भेजा। सुखदेव मुनि के पास लंगोटी और सोटी थी उसने उसे वहीं डयोढ़ी में रख दिया।

आगे जाकर सुखदेव मुनि ने देखा कि राजा जनक प्रभु रंग में मस्त बैठा है। एक नौकर ने आकर कहा महाराज जी! बाजार में आग लग गई है। राजा जनक ने कहा, ''हरि इच्छा।'' सुखदेव मुनि के दिल में ख्याल आया कि राजा का काम था वह जाकर प्रजा की रक्षा करता लेकिन इसने तो बस! हरि इच्छा कह दिया अगर इसके महल में आग लगी होती तो क्या यह इंतजाम न करता?

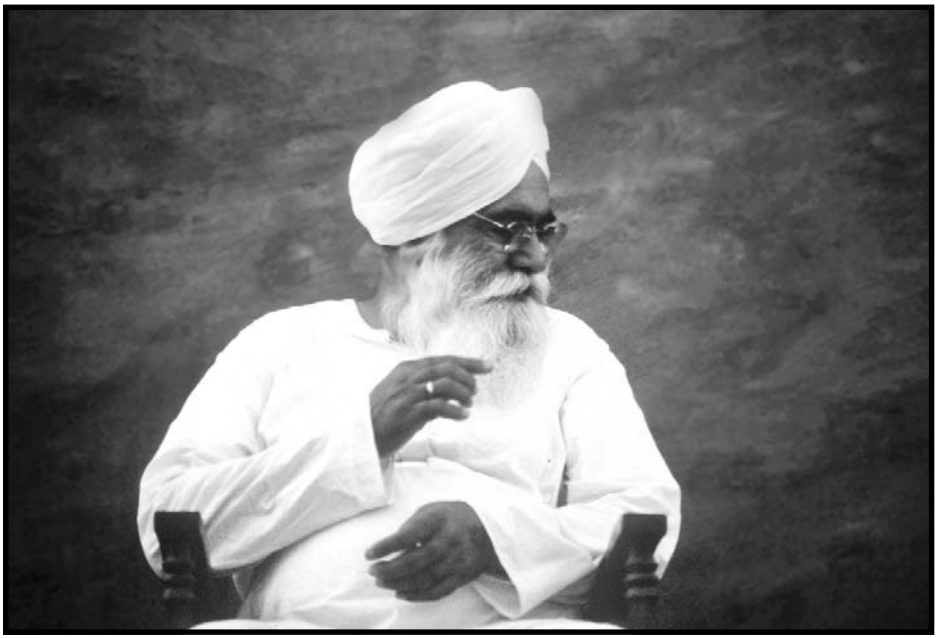

इसी तरह फिर वही नौकर भागा-भागा आया कि अब तो छावनी में भी आग लग गई है राजा जनक ने कहा, ''हरि इच्छा।'' फिर नौकर ने आकर बताया कि अब तो महल में भी आग लग

चुकी है राजा जनक फिर उसी लहजे में बोले, ''हरि इच्छा।'' जब सुखदेव मुनि ने महलों में आग लगने की बात सुनी तो डयोढ़ी पर रखी अपनी लंगोटी और सोटी उठाने के लिए दौड़ा कि मेरी लंगोटी और सोटी आग की भेंट न चढ़ जाए।

राजा जनक ने सुखदेव मुनि की बाँह पकड़कर कहा, ''मेरे बाजार जल गए, मेरी छावनी जल गई आखिर मेरे महल को आग लग गई। तेरी चीजें कितनी कीमती हैं तेरी सोटी और लंगोटी एक-दो रूपये की ही होगी? अब तू सोचकर बता कि त्यागी कौन है, तू इतना नुकसान भी नहीं सह सकता?''

तब सुखदेव मुनि ने कहा कि मैं आपसे नाम लेने के लिए आया हूँ आप मुझे नाम दें। आज तो सन्तों ने हम पर बहुत भारी दया की है कि जब कोई आता है उसे शब्द-नाम के साथ जोड़ देते हैं लेकिन उस वक्त परिक्षा लेकर ही नाम देते थे और लोग नाम की उतनी ही कद्र भी करते थे। जब राजा जनक सुखदेव मुनि को नाम देने लगे तो राजा जनक ने कहा कि अभी बर्तन साफ नहीं। सुखदेव मुनि वापिस फिर अपने पिता के पास आया, पिता ने कहा कि राजा जनक के बिना तुझे कोई ऊपर लेकर नहीं जा सकता।

इतिहास में जिक्र आता है कि सुखदेव मुनि बारह साल बाहर-अंदर कारोबार करता रहा। राजा जनक जिस चौबारे में बैठकर खाना खाकर जूठी पत्तलें नीचे फैंकता था सुखदेव मुनि उस चौबारे के नीचे आकर खड़ा हो जाता था। सुखदेव मुनि ने बारह साल तक अपने सिर के ऊपर जूठन डलवाई। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

झूठन झूठ पई सिर ऊपर फिर मनुआ तिल न डुलावांगे।

सुखदेव मुनि अपने सिर के ऊपर जूठन डलवाता रहा, बिगड़े मन का यही ईलाज है उसने अपने मन को डोलने नहीं दिया फिर

राजा जनक के लिए मन में अभाव नहीं लाया। आखिर बारह साल बाद राजा जनक के पास पेश हुआ कि महाराज जी! मुझे नाम दें। बर्तन साफ था, राजा जनक ने उसे नाम के साथ भरपूर कर दिया।

महाराज जी कहा करते थे कि सन्तमत में ऐसा नहीं कि इसे नाम लिए हुए चालीस साल हो गए हैं या इसे नाम लिए हुए दो महीने हुए हैं। प्रेमी आत्मा का गुरु के पास आना इस तरह है जैसे खुष्क बारूद को आग के नजदीक कर दें। गीले बारूद को पहले आग का सेक मिलता है जब वह खुष्क हो जाता है फिर उस बारूद को आग लगती है। प्रेमी आत्मा खुष्क बारूद की तरह गुरु के पास तड़प लेकर आती है प्रेमी आत्मा का बर्तन खाली होता है गुरु उसे रूहानियत से भर देता है।

राजा जनक ने सुखदेव मुनि को नाम दिया और उसे रूहानियत से मालोमाल कर दिया। सुखदेव मुनि जब घर आया तो उसके पिता ने पूछा, ''क्यों भई! गुरु के पास से हो आया है?'' सुखदेव मुनि ने कहा, ''हाँ।'' वेद व्यास ने पूछा गुरु कैसा है? सुखदेव मुनि गुरु की क्या महिमा बयान कर सकता था? वह चुप हो गया। वेद व्यास ने पूछा, ''क्या गुरु सूरज की तरह है?'' सुखदेव मुनि ने कहा, ''हाँ! गुरु का तेज सूरज की तरह है सूरज में तपिश है लेकिन गुरु बिना तपिश के है।'' फिर वेद व्यास ने पूछा, ''क्या गुरु चंद्रमा की तरह है?'' सुखदेव मुनि ने कहा, ''चंद्रमा के अंदर दाग है लेकिन गुरु बेदाग है।'' वेद व्यास ने पूछा, ''गुरु किसकी तरह है?'' सुखदेव मुनि ने कहा कि मैं गुरु के बारे में कुछ भी बयान नहीं कर सकता। गुरु नानक साहब कहते हैं:

कित मुख गुरु सलाहिए, गुरु करण कारण समरथ।

आप कहते हैं, ''कौन सा मुँह है जिससे हम गुरु की महिमा बयान कर सकते हैं?'' सहजो बाई भी कहती है, ''अगर मैं सारे समुद्रों की स्याही बना लूं, सारे पर्वतों का कागज बना लूं, सारी वनस्पति की कलम बना लूं फिर भी मैं गुरु की महिमा नहीं लिख सकती क्योंकि गुरु जो कुछ है सो है।''

आप हमें बहुत प्यार से समझाते हैं कि जो महात्मा ऊपर जाकर प्रभु से मिल जाता है उसके अंदर बहुत नम्रता, आजिजी होती है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्तों को प्रभु की तरफ से नम्रता विरासत में मिली होती है।''

सूरदास जी परमात्मा के आगे विनती करते हैं कि हे प्रभु! मैं तेरे द्वारे पर आया हूँ तू मेरे अवगुण मत देखना क्योंकि मैं गुनाहगार हूँ यह सब कुछ तेरी दया-मेहर से ही हुआ है।

सम दरसी है नाम तिहारो, अब मोहिं पार करो।।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि सन्त पर्दापोश होते हैं, सन्त सेवक को कुछ नहीं कहते बल्कि उसे दिलेरी देते रहते हैं अगर गुरु सेवक के अवगुण देखने लगे तो सेवक गुरु से फायदा नहीं उठा सकते।

आमतौर पर आप पेशावर की एक बूढ़ी औरत की मिसाल दिया करते थे कि पेशावर में एक बूढ़ी रहा करती थी उसका यह काम था अगर गली में से कोई आदमी निकलता तो वह ताना-मेहणा मारती कि तू फलानी औरत के पास से आया है या फलानी औरत के पास जा रहा है अगर वहाँ से किसी औरत ने गुजरना तो उसने ऐसा ही ताना-मेहणा उस औरत पर लगा देना। आखिर लोगों ने उस गली से निकलना ही छोड़ दिया कि उस गली में ऐसी

बूढ़ी बैठी है जो बिना मतलब ही हमारी बातें बनाती है। अगर गुरु हमें यह बताने लगे कि तुझमें यह अवगुण है तू यह करके आया है तो आप सोचकर देखें! हम कभी भी गुरु के पास नहीं जा सकते लेकिन गुरु को सब कुछ पता होता है गुरु अंतर्यामी पुरुष होता है। गुरु को दूसरों के मस्तक का ज्ञान इस तरह होता है जिस तरह काँच के बर्तन में कोई चीज पड़ी हो तो वह साफ दिखाई देती है।

सूरदास जी कहते हैं कि हे सतगुरु! तेरा नाम समदर्शी है, तू इस दुनिया का वरतारा देख रहा है और आगे प्रभु के घर से भी जुड़ा हुआ है; जैसे भी हो आप मुझे पार करें। अगर हम यह समझ लें कि हमारा गुरु समर्थ है सब कुछ जानता है तो हम कभी भी गुरु के आगे अपनी बड़ाई नहीं करेंगें कि मैं ऐसा हूँ मैं वैसा हूँ, मैं इतना भजन करता हूँ लेकिन हम गुरु को अपने जैसा ही इंसान समझते हैं इसलिए हम गुरु के पास जाकर बहस भी कर लेते हैं।

मैंने देखा है कि एक बार महाराज जी के पास एक ऐसा आदमी आया जिसने महाराज जी को पत्र लिखा था कि मैं बीमार हूँ। महाराज जी ने उसे लिखा कि कोई बात नहीं भई! ईलाज करवा, भजन-सिमरन कर। उसने भजन-सिमरन किया लेकिन वह ठीक नहीं हुआ। हमें पता है कि बीमारी-तंदरुस्ती हमारे कर्मों के कारण ही आती है। उसके बाद जब वह महाराज जी से मिला तो वह उन्हें एक साधारण इंसान समझकर ही बात कर रहा था। उसने महाराज जी से कहा कि मैंने आपको पत्र लिखा था, मैंने आपके कहे अनुसार सब कुछ किया लेकिन मैं फिर भी ठीक नहीं हुआ।

मैंने उसे बहुत प्यार से एक तरफ करके पूछा कि तूने नाम लिया है? उसने कहा, ''हाँ।'' मैंने उससे पूछा कि तू इन्हें क्या समझता है? उसने कहा मैं तो इन्हें प्रभु ही समझता हूँ। मैंने कहा

कि तू कैसी बात कर रहा है? उसने बहुत रोष से कहा कि मेरा मन मुझे धोखा दे गया इसलिए मैं इनसे ऐसे सवाल कर रहा था। मैंने कहा कि तुझे पता होना चाहिए कि बीमारी हमारे कर्मों की है, गुरु मदद जरूर करता है इसमें कोई शक नहीं। सतसंगी से पूरा कर्म नहीं भुगतवाया जाता जितनी रियायत हो सकती है गुरु रियायत जरूर करता है क्योंकि यह उसकी दया-मेहर है।

आप महाराज सावन सिंह जी के पत्र पढ़कर देखें! बाबा जयमल सिंह जी ने कहा था कि सावन सिंह जी के ऊपर पाँच साल कष्ट आना था लेकिन स्वामी जी ने दया-मेहर करके उस कष्ट को पाँच महीने में ही काट दिया। आप प्यार से समझाते हैं कि तेरा नाम सब कुछ जानता है, मैं भिखारी बनकर तेरे दर पर आया हूँ तू मुझ पर दया-मेहर कर मुझे इस भवजल से पार कर दे।

इक नदिया इक नार कहावत, मैलो नीर भरो।।

जब बरसात आती है जंगलों में से छोटे-छोटे नालों का पानी नदी में आकर गिरता है। जंगल में कहीं पत्ते तो कहीं गंद पड़ा होता है वह सब बहकर नदी में आ जाता है, तब नदी यह नहीं कहती कि तुम नाले हो मैं नदी हूँ तुम मैले हो मैं तुम्हें अपने में जगह नहीं देती। साफ पानी गंदे पानी को अपने में मिला लेता है तो हम उस पानी में स्नान करते हैं, उसे गंगा या सरस्वती भी कहते हैं।

जब दोनों मिली एक बरन भये, सुरसरि नाम परो।।

इसी तरह प्रभु समुंद्र है और हमारी आत्मा उसके छोटे-छोटे कतरे हैं। जब सन्त-महात्माओं की दया-मेहर से यह आत्मा सन्तों की तरफ जाती है तो चाहे यह विषय-विकारों से कितनी भी मैली हो उस महान प्रभु के समुंद्र में मिलकर यह भी प्रभु कहलाती हैं। हमारी आत्मा पवित्र थी लेकिन यह मन भंगी का साथ लेकर अति

मैली हो गई, अपने आपको भूल गई। जब आत्मा को शब्द-नाम की तपिश मिलती है और यह प्रभु में जाकर समा जाती है तब इसे पता लगता है कि मैं तो ऐसे ही दुनिया के विषय-विकारों में भटकती रही। मेरा असल कोई और था मैं तो पहले भी परमात्मा के बीच थी अब भी परमात्मा के बीच आ चुकी हूँ मेरा तो यही घर था।

इसी तरह जब बादलों का पानी जमीन पर आकर गिरता है उस समय पानी गंदगी का, जमीन का साथ लेकर बदबू पैदा कर देता है और अपने आपको बदबू समझता है लेकिन जब उसी पानी को सूरज की तपिश मिलती है पानी बुखारात बनकर बादलों में समा जाता है फिर उस पानी को पता लगता है कि गंदगी कोई और चीज थी मैं तो पहले भी प्योर था अब भी प्योर हूँ।

महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि हमारी आत्मा प्रभु से बिछुड़ी हुई है। प्रभु समुंद्र है और आत्मा उसका कतरा है।

इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक परो।।

आप प्यार से बहुत सुंदर मिसाल देकर समझाते हैं कि एक लोहा मंदिर में पूजा के लिए रखते हैं जिसमें अच्छी सामग्री डाली जाती है लेकिन दूसरा लोहा कसाई के घर में है, हैं दोनों लोहे ही।

पारस गुन अवगुन नहिं चितवै, कंचन करत खरो।।

आप कहते हैं कि पारस के अंदर ऐसी ताकत है कि लोहा चाहे कसाई के घर का हो चाहे मंदिर का हो, जब दोनों लोहे पारस के संपर्क में आते हैं तो पारस किसी के अवगुण नहीं देखता लोहे को खरा सोना बना देता है। इसी तरह सन्त-महात्मा को गरज नहीं चाहे कोई पापी है या पुन्नी है, अधिकारी है या अनाधिकारी है उन्हें अपने कत्तर्व्य पर मान होता है।

महाराज जी कहा करते थे कि धोबी के पास तेली, हलवाई और जेंटलमेन का कपड़ा भी आता है। धोबी को पता है कि जेंटलमेन का कपड़ा थोड़ी सी मेहनत से साफ हो जाता है लेकिन हलवाई और तेली का कपड़ा ज्यादा मेहनत लेता है। धोबी दोनों में से सफेदी निकाल लेता है।

इसी तरह सन्त-सतगुरु को पता होता है क्योंकि उन्होंने ही अधिकारी बनाना होता है। हम पापी हैं, हमें पाप नहीं करना चाहिए। जब सन्त हमारे अंदर नाम रखते हैं तो नाम सारे पापों का नाश कर देता है। कबीर साहब कहते हैंः

जब ही नाम हृदय धरयो भयो पाप का नाश।
मानो चिड़गी आग की बड़ी पुरानी घास।।

नाम पापों का नाश कर देता है जिस तरह छोटी सी चिंगारी घास के ढ़ेर को राख कर देती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

नाम न मैला होय।

नाम कभी मैला नहीं होता। जिस तरह साबुन-सर्फ को मैल नहीं लगती बल्कि वह तो कपड़े में से मैल निकाल देता है इसी तरह नाम को कोई मैला नहीं कर सकता। जिसके अंदर नाम रखा जाता है नाम उसे सब पापों से बरी कर देता है और उसे साफ करके प्रभु के साथ मिला देता है। नाम ही प्रभु है। जिसके अंदर नाम प्रकट हो जाता है नाम उसे सब पापों से बचा लेता है।

महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि जिस तरह पारस लोहे का अवगुण नहीं देखता उसी तरह सन्त भी किसी के अवगुण नहीं देखते। आप इतिहास पढ़कर देखें! महात्मा की शरण में आकर बड़े-बड़े डाकू, चोर, ठग भले इंसान बन गए।

मैंने कई बार हुजूर महाराज की हिस्ट्री बताई है कि हमारे इलाके का एक खास आदमी था अब तो वह चोला छोड़ चुका है। उसने कई कत्ल किए हुए थे, जब महाराज जी ने उससे पूछा भई! क्या काम करता है? उसने कहा कि मैं आपको क्या बताऊं जानवरों का शिकार तो दुनिया ही करती है मैंने तो बंदो के शिकार किए हैं। महाराज जी ने हँसकर कहा कि अब क्या विचार है? उसने कहा कि मैं आपके द्वार पर तौबा करने आया हूँ। जब हुजूर ने उसे अपने चरणों में जगह दी तब कुछ दिन लोगों ने मुखालिफत की कि देखो जी! इतने महान सन्त होकर इन्होंने कैसे आदमी को नाम दे दिया।

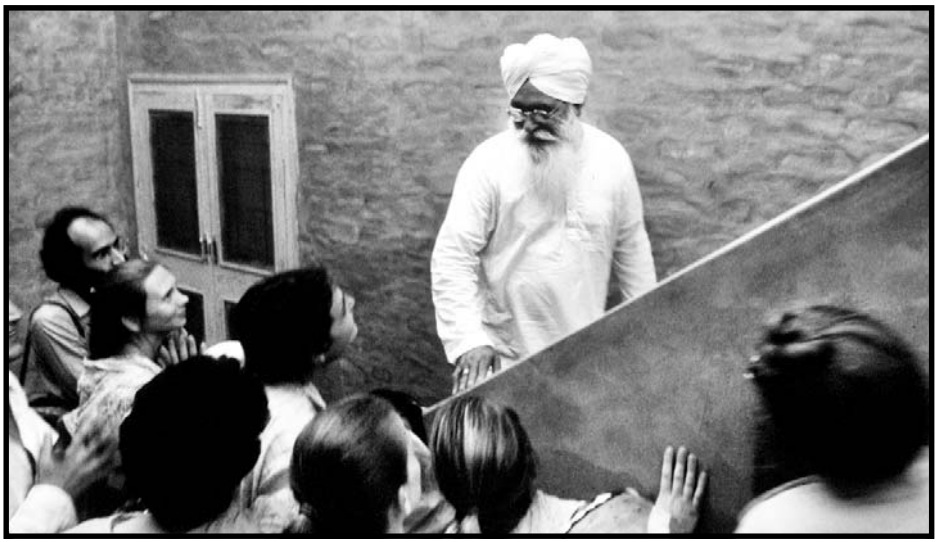

उसी दिन का वाक्या है कि हुजूर के चरणों में एक ऐसा आदमी भी पेश हुआ था जिसने कभी मीट-शराब नहीं खाया-पिया था, हुजूर ने उसे नामदान नहीं दिया। लोग बड़े परेशान थे कि जिस आदमी ने कभी मीट-शराब नहीं खाया-पिया उसे हुजूर ने नाम नहीं दिया और जिस आदमी ने इतने बुरे कर्म किए हुए थे उसे

नामदान दे दिया है। वक्त ने साबित किया कि वह प्रेमी कुछ साल जिंदा रहा लेकिन उसने पहले वाला कोई काम नहीं किया। जबकि दूसरा शख्स कुछ दिनों बाद इतना बिगड़ा कि उसने अपने आस-पास के लोगों को बहुत दुखी कर दिया।

महात्मा हमें बताते हैं कि सन्त-महात्मा किसी के अवगुण नहीं देखते बल्कि वह अवगुणियों के लिए ही संसार में आते हैं, उन्हें अपने घर में जगह देते हैं। पारस इतनी शक्ति रखता है कि वह लोहे को सोना बनाता है लेकिन सन्त वह पारस होते हैं जो जीव को अपना रूप बना लेते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

पारस में और सन्त में बड़ा अंतरो जान।
ओ लोहा कंचन कर दे वो करदे आप समान।।

पारस सिर्फ लोहे को सोना बना सकता है लेकिन पारस नहीं बना सकता। सन्तों और पारस में यह फर्क है कि सन्त जीव को अपना ही रूप बना लेते हैं।

नानक गुरु ते गुर भये देखो तिसकी रजाय।

देखें! उसकी कैसी रजा है? गुरु ने हमसे मिलकर हमें अपने जैसा ही बना लिया। आप बहुत प्यार से समझाते हैं जिस तरह पारस लोहे का अवगुण नहीं देखता उसे सोना बना देता है। उसी तरह सन्त-महात्मा जब भी आते हैं वे यह नहीं देखते कि तू क्या करके आया है? उन्हें पता है कि जब हम इसके अंदर नाम रख देंगे यह जरूर साफ हो जाएगा, जरूर मालिक की तरफ जाएगा।

यह माया भ्रम जाल निवारो, सूरदास सगरो।।

हमारे मन के ऊपर माया का पर्दा है और आत्मा के ऊपर मन का पर्दा है। आमतौर पर हम इन पर्दों के भ्रम में ही फिरते हैं, माया भ्रम को कहते हैं। हम इस भ्रम में ही परेशान हुए बैठे हैं।

इतिहास में एक कथा आती है कि भगवान और माया का संवाद हुआ। माया ने कहा, ''मेरे भक्त तुझे छोड़ सकते हैं तुझे बाहर निकाल सकते हैं।'' भगवान ने कहा, ''मेरे भक्त तेरी तरफ देखते भी नहीं।'' उन्होंने कहा हम इस चीज का निर्णय कर लेते हैं भगवान ने एक साधु का रूप धारण कर लिया और माया ने एक औरत का रूप धारण कर लिया। पहले भगवान एक साहूकार के घर में गए और वहाँ जाकर उन्होंने कहा, ''मैंने भजन-अभ्यास करना है आप मुझे अपने घर में जगह दें।''

उस घर के लोगों ने कहा कि हम महात्मा की सेवा करके खुश होते हैं, हम तो यह घर महात्मा के लिए ही समझते हैं। आप आएं ऊपर चौबारे में रहें हम आपकी हर तरह की सेवा करेंगे। महात्मा को वहाँ रहते हुए कुछ दिन हो गए घर के लोग महात्मा की खूब सेवा करते रहे, उनके ऊपर माया का कोई असर नहीं था।

आखिर कुछ दिनों बाद माया भी औरत का रूप धारण करके उनके घर आ गई। उस औरत ने गले में माला डाल रखी थी और साधु का रूप धारण किया हुआ था। माया ने कहा, ''मैंने खाना तैयार करना है।'' घर के लोगों ने कहा हाँ जी! आप खाना तैयार करें, उन्होंने बर्तन वगैरहा दिए। माया ने सोने के बर्तन बना लिए, यह तो एक भ्रम था।

घर के लोगों ने देखा कि यह महात्मा औरत इतनी शक्तिशाली है कि इसने बर्तन भी सोने के बना लिए हैं लेकिन जो महात्मा अपने चौबारे में बैठा है उसने तो ऐसा कुछ नहीं दिखाया। जब वह औरत खाना बनाकर वहाँ से जाने लगी तो उसने बर्तन वहीं छोड़ दिए। उस समय तक उस घर के लोगों पर माया का कोई असर नहीं था तो उन्होंने कहा महात्मा जी आप इन बर्तनों को ले जाएं

हमने इन बर्तनों का क्या करना है? उस औरत ने कहा कि मेरा यह कायदा है कि मैं जिन बर्तनों में खाना बनाती हूँ वे बर्तन कभी अपने साथ लेकर नहीं जाती, आगे मालिक अपने आप ही दे देता है।

घर के लोगों के दिल में ख्याल आया अगर यह महात्मा दो-चार दिन हमारे घर में रह जाए तो हम बहुत धनी हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि महात्मा जी! आप थकी हुई हैं आज का दिन यहाँ आराम करें फिर चले जाना। आपको पता है कि लालची आदमी कैसे खुशामदें करता है। आखिर उसने वहाँ रहना ही था। शाम को जब वह जाने लगी तो उन्होंने फिर रोका तो महात्मा औरत ने कहा कि मैं एक शर्त पर यहाँ रह सकती हूँ अगर आप मुझे वह चौबारा दे दें ताकि मैं एकांत में बैठकर अपना अभ्यास कर सकूं।

घर के लोगों ने चौबारे में जाकर महात्मा से कहा, ''बाबा जी! आपको यहाँ बैठे हुए कई दिन हो गए हैं, अब कुंभ का मेला भी है आप वहाँ चले जाएं फिर कभी यहाँ आकर एक महीना लगा लेना। वह महात्मा औरत के जामें में है, औरत की हठ है। वह कहती है कि मैंने यही जगह लेनी है।'' भगवान ने कहा कि कोई बात नहीं तुम यह जगह ले लो मैं नीचे चला जाता हूँ। भगवान ने कहा कि मुझे रात तो नीचे उस जगह पर काट लेने दें।

जब महात्मा नीचे आ गए तो माया ऊपर चली गई। सुबह माया ने कहा कि मैं जा रही हूँ। घर के लोगों ने कहा कि आप बताएं तो सही आपको क्या दिक्कत है? माया ने कहा कि आपके घर जो बैठा है यह साधु नहीं है, यह तो मुझे आँखें फाड़-फाड़कर देख रहा है। इसे घर से निकालें तभी मैं यहाँ रह सकती हूँ।

माया के लालच में उन बेचारों को सब कुछ ही करना पड़ा। उन्होंने कहा महात्मा जी! अब आप चले जाएं फिर कभी आ जाना।

महात्मा चुप करके चले गए। महात्मा के जाने की देर है वहाँ देखते हैं न कोई महात्मा है न कोई सोने के बर्तन हैं। घर के लोग बहुत पछताए कि महात्मा को भी घर से निकाला माया भी नहीं रही।

आखिर जब भगवान और माया बाहर आए तो माया ने कहा देखा! तू वहाँ अपना आसन लगाए बैठा था लेकिन जब मैंने वहाँ जाकर अपना चमत्कार दिखाया तो उस घर के लोगों ने तुझे अपने घर से निकाल दिया। महात्मा ने कहा, ''ये दिखावे के भक्त थे। तू काशी में कबीर साहब के पास जा वहाँ जाकर तुझे पता लगेगा।''

माया ने औरत का रूप धारण कर लिया और कबीर साहब के पास जाकर कहा, ''तू मेरी तानी पहले बुन दे।'' कबीर साहब ने कहा मेरा यह उसूल है कि मैं बारी से काम करता हूँ पैसे-टके का सवाल नहीं मैं सबसे एक जैसे ही पैसे लेता हूँ। माया ने कहा कि तू मुझसे ज्यादा पैसे ले लेना। कबीर साहब ने सोचा यह तो कोई छल है और उससे कहा कोई बात नहीं तू यहाँ बैठ। कबीर साहब अंदर जाकर छुरा ले आए और उस छुरे से माया का नाक और कान काट दिए। कबीर साहब कहते हैं:

नाको काटी कानो काटी काट कूटकर डारी।
कहे कबीर संतन की बैरन तीन लोक की प्यारी।।

माया भ्रम को कहते हैं। इंसान भ्रम में पड़कर कभी कहता है कि सन्त-महात्मा जो कहानियां सुनाते हैं पता नहीं यह सच हैं या झूठ है? बेचारा कभी बैठा हुआ ऐतबार भी कर लेता है कि फलाने का फायदा हुआ था। हम जिंदगी में कभी-कभी सतगुरु को आता हुआ भी देखते हैं, आत्मा की संभाल होते हुए भी देखते हैं। कभी-कभी हमारे मन से भ्रम निकल भी जाता है।

सूरदास जी कहते हैं, ''हे प्रभु! मेरे ऊपर माया का जो जाल भ्रम है तू मुझे उसमें से निकालकर अपनी दया मेहर कर।''

अब की बेर मोहिं पार उतारो, नहिं प्रन जात टरो।।

अब आप कहते हैं, ''मैं इस बार तेरे दर पर आया हूँ अगर मैं पहले आया होता तो मैं इस दुखी संसार में हाजिरी क्यों लगाता! जो कुछ पहले हो चुका है वह हो चुका है, अब तू मुझे माफ कर दे।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

पिछले अवगुण बक्श ले प्रभ अग्गे मार्ग पावे।

पीछे जो कुछ किया है उसे बक्श कर सतगुरु आगे का रास्ता बता देता है कि तूने इस तरफ जाना है अगर फिर हम गुरु के कहे मुताबिक अपना जीवन नहीं ढ़ालते तो कबीर साहब कहते हैं:

गुरु बेचारा क्या करे जे सिक्खन में चूक, अंधे एक न लग्गी जे बाँस बजाई फूँक।।

गुरु का क्या दोष हो सकता है? गुरु ने हमें चढ़ते हुए का रास्ता बताया लेकिन हम छिपते की तरफ चल पड़ते हैं। कई सतसंगी भजन-सिमरन नहीं करते और अंत समय में एक-दूसरे से पूछते हैं क्या स्वरूप आता है, गुरु आया है? बहुत अफसोस की बात है क्या गुरु ने कर्ज लिया है कि गुरु आए लेकिन हम जो मर्जी करें।

हमारा फर्ज है कि गुरु ने हमें जो रास्ता बताया है हम उस रास्ते पर चलें। गुरु अपनी ड्यूटी से कभी कोताही नहीं बरतता उसे दूर-नजदीक का फर्क नहीं पड़ता। आप जब भी गुरु को याद करेंगे गुरु को लाज है वह आकर बच्चों तक की भी संभाल करता है।

मुक्तसर का वाक्या है कि जब महाराज सावन सिंह जी ब्यास से सिरसा-सिकंदरपुर जाते थे तब आपके सतसंगी रास्ते में प्यार से कई-कई घंटे इंतजार करते थे। महाराज जी ब्यास से चलते हुए

कई बार लेट भी हो जाते थे। हमें पता है बच्चे भी हमारे साथ चले जाते हैं, कई बार हमारा अपना ख्याल इतना भरोसे वाला नहीं होता, बच्चों का जैसा ख्याल हो वह वैसा ही पकड़ लेते हैं।

एक छोटी सी लड़की माता-पिता के साथ जाया करती थी। जब वह लड़की सत्तरह-अठारह साल की हुई उस लड़की का अंत समय आया तो उसने अपना अनुभव बताया। उसकी माता को नाम था लेकिन बाकी परिवार को नहीं था। लड़की ने कहा, ''छिड़काव करके एक तरफ हो जाओ महाराज जी की कार आ रही है उनके सफेद कपड़े हैं।'' परिवार ने कहा कि हमें तो दिखाई नहीं दे रहे। उस लड़की ने कहा कि तुम एक तरफ तो हो जाओ। इस चीज ने उस परिवार में तहलका मचा दिया। सबने जाकर नामदान प्राप्त किया। कहने का भाव गुरु आकर बच्चों तक की भी संभाल करता है।

महाराज सावन सिंह जी तो यहाँ तक कहा करते थे कि सन्त सतसंगी के कुत्ते-बिल्लों तक की भी संभाल करते हैं लेकिन हम आँखों से अंधे हैं। हम देख नहीं रहे होते कि संभाल करने के लिए कोई आया है? वह आता जरूर है क्योंकि उसे लाज है। हमें भी कुछ न कुछ करना चाहिए जो कुछ गुरु ने बताया है हमें उसके मुताबिक अपना जीवन ढ़ालना चाहिए।

सूरदास जी ने इस छोटे से शब्द में हमें बहुत प्यार से नम्रता और आधीनता सिखाई है कि किस तरह हमें अपने अंदर नम्रता आधीनता, आजजी पैदा करनी है। हमने किस तरह दिन-रात प्रभु के आगे फरियादें करनी हैं कि हे प्रभु! तू मेरा गुण या अवगुण न देख, मुझे अपने चरणों में जगह दे। हमें भी चाहिए कि हम भजन-अभ्यास करें, अपने जीवन को पवित्र बनाएं।

10 फरवरी 1979

***

शब्दों के जरिए आभार प्रकट करना

16 पी.एस.आश्रम (राजस्थान) DVD 608 {3}

एक प्रेमी:- *महाराज जी! जब आप मुस्कुराते हैं या हँसते हैं तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। आपकी मुस्कुराहट को देखकर मेरे अंदर आनंद भर जाता है लेकिन मुझे इस बात की चिंता है कि बाबा सावन सिंह जी ने कहा था, ''गुरु जब हँसता है तब हमें हँसना नहीं चाहिए सिर्फ उनके दर्शन करते रहना चाहिए।''*

अगर हम गुरु के हँसने पर गुरु के सामने हँसते हैं तो जो दया गुरु हमें दे रहे होते हैं हम उस दया को खो देते हैं। मेरा सवाल यह है क्या आपका भी यही कहना है, क्या यह बात सिर्फ सतसंग पर लागू होती है या हर जगह लागू होती है?

बाबा जी:- हाँ भई! सन्तों की बात को समझना आसान नहीं होता अगर हम सन्तों की बात को समझ जाएं तो हमारा काम ही बन जाता है। महाराज सावन सिंह जी बहुत हँसमुख थे, आप प्रेमियों से मजाक भी कर लेते थे आपकी महिमा बयान से बाहर है। उस वक्त हमें समझदारी से काम लेना चाहिए कि कहीं हम गुरु से कोई मखौल न कर दें। आप अपना ध्यान किसी और तरफ न करें अगर हमारा ध्यान उनके दर्शनों की तरफ है ख्याल सिमरन की तरफ है तो हम गुरु की दया को प्राप्त कर रहे होते हैं क्योंकि सतगुरु का दया देने का अपना ही तरीका होता है।

उस समय हिन्दुस्तान में कपड़ा बुनने की मशीनें नहीं होती थी। आमतौर पर हिन्दुस्तान में बूढ़ी औरतें चरखा कातती थी और कपड़ा भी हाथों से ही बुना जाता था। महाराज जी को दरियों की जरूरत रहती थी। बहुत सी बूढ़ी औरतें यह सेवा ले लेती थी। जब बहुत सी बीबीयाँ इकट्ठी होकर कतना कातती तो उस समय महाराज जी उनके बीच में कुर्सी रखकर बैठ जाते और उन बीबीयों के साथ उनकी तरह ही बातें करने लग जाते। आप उनको इतना हँसाते कि हँसते-हँसते उनके पेट में दर्द होने लग जाता था।

जिन लोगों को यह नजारा देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है शायद! वे बीबीयां और वे मर्द उस नजारे को भूल सकेंगे कि वह नजारा कैसा था? जब सन्त हमें खुश कर रहे होते हैं तो कई दफा हम मुस्कुराकर अभाव ले आते हैं कि देखो जी! सन्त भी हमारी तरह ही हँस रहे हैं।

एक बार महाराज सावन सिंह जी खाना खाकर आराम कर रहे थे कि तीन-चार प्रेमियों ने आकर दरवाजा खोल दिया। महाराज

जी ने उन्हें डाँटा, ''भई! मुझे आराम क्यों नहीं करने देते?'' अब ऐसे भी प्रेमी होते हैं जिनका मन डोल जाता है लेकिन एक ऐसा भी प्रेमी था जिसने कहा, ''बहुत प्रसादी मिल गई हो सकता है जिंदगी में गुरु से ऐसी प्रसादी न ही मिलती। महाराज जी अंदर से कितने खुश थे, हँस रहे थे।'' यह अपने-अपने बर्तन का सवाल है।

हमें पता नहीं कि मन किस समय हमारे साथ चालाकी कर जाएगा, हमें मन की चालों से बचना चाहिए। महाराज सावन सिंह जी सदा कहा करते थे, ''गुरु किसी के साथ भी बात करता हो आप उस तरफ तवज्जो न दें, आप अपना ध्यान गुरु की तरफ रखें।''

आपको भजन बोलते हुए कई दिन हो गए हैं अगर हम सतगुरु से कोई सीधी बात कहें कि तू भगवान है, तू रब है, मैं तेरे दर पर गिरा हुआ हूँ तू मेरी लाज रख मुझे दर्शन दे मैं तड़प रहा हूँ लेकिन सतगुरु हमें कभी भी ऐसी बात करने की इजाज़त नहीं देते। न ही हम हिम्मत रखते हैं लेकिन जो अंदर जाते हैं **वे शब्दों के जरिए ही अपना आभार प्रकट करते हैं**। शब्द एक ऐसी चीज़ है कि हम गुरु के आगे खड़े होकर बहुत प्यार से बोल लेते हैं और गुरु सुनकर खुश भी होता है।

मुझे महाराज कृपाल के आगे शब्द बोलने का मौका मिलता रहा है, आप शब्द सुनकर बहुत खुश होते थे। आप नए लिखे शब्दों का अच्छी तरह अध्ययन करके देखें कि जब शिष्य अंदर जाता है तो वह कितनी नम्रता धारण करता है वह गुरु को ही भगवान रूप, शब्द रूप गुरु कहकर ब्यान करता है; सच्चे दिल से गुरु के चरणों में गिरता है। आपमें से कई प्रेमी शब्दों को कविता के रूप में पढ़ते हैं लेकिन बहुत से प्रेमी इन शब्दों को बहुत गंभीरता से पढ़ते हैं, वे जब शब्द बोल रहे होते हैं तो उनके चेहरे देखने के काबिल होते हैं।

मैं बताया करता हूँ कि जब तक कोई आँखों को पोंछने वाला नज़दीक न हो तब तक रोने का मजा नहीं आता। इसी तरह शब्द बोलने में रस तभी आता है अगर आप अपने गुरुदेव को सामने खड़ा समझें। एक-एक तुक उस गुरु को सुनाकर कहें फिर आप देखें इन शब्दों के अंदर क्या रस है?

आमतौर पर गुरमेल सिंह पाठी के साथ शब्दों की प्रैक्टिस करता रहा है। प्रेमी शब्दों को टेप करके भी ले जाते रहे हैं। कुछ शब्द ऐसे हैं जो सतसंग शुरू करने से पहले मेरे सामने बोले हैं। गुरमेल सिंह ने यह अंतर निकाला कि जो शब्द अकेले में बोले जाते हैं उन शब्दों की आवाज का रस और जो शब्द मेरे सामने बोले जाते हैं उनमें करोड़ों कोहों का फर्क है।

जब मैं कोलंबिया के टूर पर गया तो वहाँ कुछ प्रेमियों ने इंटरव्यू में भी इन शब्दों के फर्क का जिक्र किया था। पप्पू ने भी पिछले साल एक बार जिक्र किया था कि पाठी जी के शब्दों की लय में फर्क है। आप पप्पू का शब्द भी सुनकर देखें जो यह आमतौर पर सुबह मेरे बैठे हुए बोलता है और जो अकेले बोलता है उसमें फर्क है।

संगत के अंदर सन्त ही हमें खुशी बख्शते हैं, वे हमें हँसने के प्यार के तरीके बताते हैं। यह बहुत पेचीदा बात है जो प्रेमी अंदर जाते हैं वे अच्छी तरह समझते हैं कि गुरु और शिष्य के बीच एक ही ताकत काम करती है फर्क इतना ही होता है कि गुरु के अंदर वह ताकत हाजिर होती है और सेवक के अंदर अभी सोई हुई है।

प्यारेयो! जिस तरह कोई आदमी घर से बेघर होकर जंगल में ऊँची-नीची जगह ठोकरे खा रहा हो हमारी भी यही हालत है अगर ऐसे मौके पर उसे उसका पिता मिल जाए और वह उसे

पहचान ले कि यह मेरा पिता है तो क्या उसे खुशी नहीं होगी? हम खुशी का इज़हार हँसकर करते हैं और गमी का इज़हार रोकर ही कर सकते हैं। क्या तब हम हँस नहीं पड़ेगें? जरूर हँसेंगे इसी तरह शिष्य गुरु को देखकर मुस्कुराए बगैर रह ही नहीं सकता।

सन्त-सतगुरु ने मेरे ऊपर दया करके मुझे मेरे पिछले जन्मों की हड्डियाँ तक भी दिखा दी और यह भी कहा कि तेरे पिछले जन्म के माता-पिता अभी जिंदा हैं अगर तू कहे तुझे उनसे मिलवा सकते हैं लेकिन मैंने हाथ जोड़ दिए। क्या ऐसा व्यक्ति अपने गुरु परमात्मा को देखकर खुश नहीं होगा, हँसेगा नहीं?

जब मेरी आत्मा का परमात्मा मेरा गुरुदेव आश्रम में आता उस समय मैं आधा पागल होता था, मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं होता था। मुझे रोना सिर्फ तभी आता जब आप यहाँ से वापिस जाने के लिए कदम उठाते। सच्चाई तो यह है कि मैं आपके दिल की बात समझ लेता था कि अब महाराज जी जाएंगे, मैं उस वक्त जरूर रोता था। जब आप देह छोड़कर संसार से गए उस समय का मेरा रोना दुनिया में मशहूर है कि मैं कितना रोया था। इस नुकसान के बारे में मैंने सतसंग में भी बताया था कि यह शिष्य का पूरा न होने वाला घाटा है। जो सच्चे प्रेमी गुरु को समझ लेते हैं सबकी ऐसी हालत हुई है। कबीर साहब कहते हैं:

आवत गुरु न हरखेया जात न दिया रोए।
कहे कबीर तैं दास का काज कहाँ से होए।।

मैं हमेशा ही बताया करता हूँ कि जितना प्यार मुझे मेरी माता की तरफ से मिला उसने जिस तरह मेरी देखभाल की इतना ख्याल सैंकड़ों माताएं भी नहीं रख सकती। मुझे अफसोस है कि मैं

शादी करवाने की अपनी माता की दुनियावी इच्छा पूरी नहीं कर सका, यह मेरे अपने बस की बात नहीं थी। मैंने अपनी माता से वायदा किया था, ''अगर मैं अपने मन को रोक न सका, अपने आपको अपने बस में न रख सका तो मैं शादी जरूर करवाऊँगा। मैंने तेरा दूध पिया हैं मैं इसे दाग नहीं लगने दूंगा, मैं अपनी जिंदगी में कभी भी व्याभिचार नहीं करूँगा।''

हाँ! हम लोग गुरु प्यार की बात कर रहे थे, हँसने की बात कर रहे थे। मैंने बताया था कि गुरु के जाने के समय मेरी क्या हालत होती थी। उस समय मैं एक तुक बोलता था दूसरी तुक परमात्मा कृपाल पूरी करते थे। मैं कहताः

नाल परदेसी न्यो न लाईए, चाहे लख टके दा होवे।

तू मुझे छोड़कर जा रहा है। मुझे अब पता लगा है कि परदेसी के साथ प्यार नहीं करना चाहिए चाहे वह कितना ही अच्छा क्यों न हो? आप हँसकर कहते :

इक गल्लों परदेसी चंगा, जद याद करे तद रोवे।

प्यारेयो! जब आप विदा होते मैं जब तक आपको दिखता रहता आप मुझे देखते रहते। यह आपकी अपनी बड़ाई, आपकी महिमा थी। मैं खुले दिल वाला हूँ जो बात कहनी है उसे खुले दिल से कह देता हूँ अगर मुझसे कोई गलती हुई है तो मैं उसे मान लेता हूँ। मैं आज भी खुले दिल से कह देता हूँ कि मैंने भक्ति इसलिए की उसकी याद इसलिए मनाई कि मुझे भगवान मिलेगा।

मैंने बचपन में कथा-कहानियाँ सुनी थी कि भगवान भक्तों के बस में होता है, भक्तों को भगवान मिल जाता है। जैसे माता को बेटा प्यारा होता है भगवान को भक्त प्यारा होता है लेकिन मुझे

इस बात का पता था कि आप मुझे संगत की सेवा सौपेंगे और मैं संगत की सेवा करूँगा। सेवा करनी कितनी मुश्किल होती है इसके बारे में मुझे बिल्कुल ज्ञान नहीं था। मैं भोला था, अंजान था।

मैंने सारी जिंदगी जिन चीज़ों से परहेज किया था आज मुझे वही सब करना पड़ रहा है अगर मैं नहीं करता तो उनके हुक्म का पालन नहीं कर रहा। वह यह है कि मैं सारी जिंदगी किसी की आँखों की तरफ नहीं देखता था लेकिन अब मुझे देखना पड़ रहा है। मैं बाबा कहलवाकर खुश नहीं था, अब मैं जगत बाबा बना हुआ हूँ। मैं अपने आपमें काफी गंभीरता से शर्म महसूस करता हूँ कि परमात्मा जो चाहता है वही होता है बन्दा कुछ नहीं कर सकता।

प्यारेयो! मैं बहुत भरोसे वाला था। मुझे पता है कि जिसे गुरु मिल जाता है जिसे वह नाम दे देता है उसकी जिंदगी का बीमा हो जाता है, गुरु उसकी आत्मा का रक्षक होता है। गुरु उसे तब तक नहीं छोड़ता जब तक परमात्मा के आगे खड़ा नहीं कर देता। जो ड्यूटी इस गरीब आत्मा को सौंपी गई है या जिस भी कमाई वाले को यह ड्यूटी सौंपी गई वे सदा रोते ही रहे। गुरु का संदेश देना बहुत मुश्किल होता है। जब हमें ऐसे आदमी मिल जाते हैं जो बिना मुआवज़े के हमारी आत्मा की सेवा करते हैं तो हम उनसे मिलकर जरूर खुश होते हैं।

प्यारेयो! मुझे महाराज सावन सिंह जी का आखिरी वक्त देखने का मौका मिला है। महाराज कृपाल को भी अच्छी तरह देखने का मौका मिला है। उनके जीवनकाल में ही लोग उनकी पगड़ी अपने सिर के ऊपर रखने के लिए तैयार होते हैं। ऐसा वे लोग करते हैं जो अंदर नहीं जाते जिन्हें गद्दी का, जायदाद का शौक होता है बेशक बाद में उन्हें कितना भी बुरा अवजाना क्यों न

चुकाना पड़े लेकिन ऐसे भी होते हैं जो अपनी पगड़ी उतारकर दूर फैंक देते हैं। ऐसे कमाई वाले लोग अपने बने मकान भी छोड़ जाते हैं।

अगर गुरु के प्रेमी के आगे सारी दुनिया का धन-दौलत, सातों समुद्रों का पानी, पहाड़, सारे द्वीप के बराबर की माया रखकर कहें कि आपको गुरु का प्यार चाहिए या नहीं? वे कहते हैं, ''गुरु का प्यार इससे भी महंगा है। माया रेत है यहीं छोड़ जानी है।'' आम दुनियादार क्या कह सकते हैं? जितना प्यार गुरु के शिष्य में होता है इतना प्यार किसी और में नहीं होता।

एक बार हमारे गंगानगर में कोई महात्मा आया उसने काफी सोना पहना हुआ था यहाँ तक वह जिस कुर्सी पर बैठता था उसमें भी सोना लगा हुआ था। महाराज सावन का शिष्य मस्ताना जो महाराज सावन पर मस्त था वह भी यहाँ आया हुआ था। मेरी और मस्ताना जी की काफी बनती थी, हमारा आपस में काफी अच्छा प्यार था। आपको पता ही है कि जब एक मत के दो आदमी मिल जाएं तो वे कितने खुश होते हैं।

शाम को हजारों की तादाद में संगत इकट्ठी हुई। आमतौर पर मस्ताना जी मुझे खड़ा कर लिया करते और कहते,''हाँ भई बता! सावन का स्वरूप कैसा था?'' क्योंकि उनकी बनाई हुई संगत नई थी संगत ने महाराज सावन को नहीं देखा था, मैंने महाराज सावन को देखा था। मैं अपनी मत के अनुसार महाराज सावन जैसे थे वैसा ही ब्यान करता कि आप बहुत सुंदर थे, आप जब हँसते थे उस वक्त फूल खिलते थे। प्रेमी हँसे बगैर रह ही नहीं सकते थे।

फिर मस्ताना जी ने मुझसे कहा, ''तूने आज जो महात्मा देखा है वह कैसा था?'' मैं किसी महात्मा की निन्दा नहीं करता

सिर्फ बताने के लिए यह कहा कि वह सावन की नाक की मैल जैसा भी नहीं था। सावन जो है वह अपनी मिसाल आप ही है।''

हम हँसने की बात कर रहे थे। महाराज सावन का एक नामलेवा महात्मा चतुरदास ऊर्दू का बड़ा शायर था। महाराज सावन सिंह जी आमतौर पर शायरी करने वालो को मौका दे दिया करते थे। महात्मा चतुरदास ने खड़े होकर कहा, ''हमने पहचान लिया है कि यह हमारा पुराना यार है हमने इसे अपने गले से लगा लिया है, अब हमारे और इसके बीच में कोई फर्क नहीं।'' यह सुनकर महाराज जी हँसते गए, हँसाते गए।

ऊर्दू का एक और शायर था जिसकी एक आँख थी। उसकी दूसरी आँख काम नहीं करती थी वह उस आँख पर मोटे शीशे का चश्मा लगाता था जिससे किसी को पता नहीं लगता था कि यह एक आँख से कांणा है। उस वक्त वह ऐनक उतारकर खड़ा हो गया। महाराज सावन सिंह जी उसकी तरफ झाँककर बोले, ''तेरी एक आँख है?'' उसने कहा, ''आप रोज़ संगत में कहते हैं कि एक आँख वाले बनें दोनो आँखों के दरम्यान ध्यान लगाएं तीसरी आँख को खोलें। हमने आपके कहने पर अमल किया है हम एक आँख वाले बनकर आपके आगे खड़े हैं।''

अब आप देख सकते हैं कि ऐसी बात सुनकर कौन सा ऐसा इंसान है जो हँसने से रह जाएगा? अगर मैं आज भी वह नजारा आँखों के आगे लाता हूँ बेशक मैं अकेला ही क्यों न चल रहा हूँ या गाड़ी में सफर कर रहा हूँ तो मुझे अकेले को ही हँसी आ जाती है।

***

06 नवम्बर 1988

धन्य अजायब

गुरु प्यारी साध संगत जी,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया–मेहर से अहमदाबाद में 6, 7 व 8 जुलाई 2018 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। आप सभी प्रेमियों के चरणों में निवेदन है कि सतसंग में पहुँचकर सन्तों के वचनों से लाभ उठाएं।

श्री देशी लोहाणा विद्यार्थी भवन,

फुटबाल ग्राउंड के सामने, (कांकरिया झील के पास)

अहमदाबाद - 380 008 (गुजरात)

फोन - 98 98 46 53 69 ■96 38 75 20 20 ■98 24 06 00 98

16 पी.एस. राजस्थान आश्रम में सतसंग का कार्यक्रमः

3, 4 व 5 अगस्त 2018